अंतरा-शब्दशक्ति

# ऐसे बनाई मैंने अपनी पहचान

आलेख संग्रह

उर्मिला मेहता

# ऐसे बनाई मैंने अपनी पहचान

(आलेख सँग्रह)

उर्मिला मेहता

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

**ISBN- 978-93-88102-15-5**

## अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

**कार्यालय:** १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

**शाखा**: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

**दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९**

**अणुडाक-** antrashabshakti@gmail.com

**अंतरताना-** www.antrashabdshakti.com

**प्रथम संस्करण २०१८ © उर्मिला मेहता**

**मूल्य: ४०.००** रुपये

**आवरण चित्र :** संदीप सोनी, वारासिवनी

**मुद्रक-** शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

**Aise banai maine apni pahchan by Urmila Mehta**

**वैधानिक चेतावनी** : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम  पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

# भूमिका

वुमन आवाज़ में अपनी रचनाएं छपने के लिए भेजते हुए मुझे वैसी ही प्रसन्नता हो रही है जैसे किसी विद्यार्थी को IAS की परीक्षा में सफलता प्राप्त करने पर होती है।

यह कटु सत्य है कि किसी भी साहित्यकार को अपनी रचना सर्वश्रेष्ठ और अति प्रिय लगती है जैसे कि तुलसीदास जी को भगवान श्रीराम लगते थे उन्होंने कहा भी है कि है कामिहि नारी पियारी जिमि लोभिहिं प्रिय जिमि दाम तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहुँ मोहि राम।

साहित्य में रचनाकार ब्रह्म के समकक्ष हो जाता है जो अपनी मनमर्जी के पात्रों का निर्माण करता है ऐसी स्थिति में वह अपनी रचना को सपूता ही मानता है । तनाव, संघर्ष और प्रदूषण युक्त आज के वातावरण में यदि कुछ अच्छा पढ़ने लिखने को मिल जाए तो मन मस्तिष्क को सही खुराक मिल जाती है। यहाँ वहाँ सारे जहाँ में ऐसी घटनाएँ और कार गुजारियाँ होती रहती हैं कि जिससे मन आक्रोश से भर जाता है और उद्वेलित होकर अभिव्यक्ति को ही अपना माध्यम बनाता है।

आरंभ में नई दुनिया दैनिक भास्कर, नव भारत आदि में कई रचनाएँ छपीं पर एक बार निर्दयी संपादक द्वारा निरर्थक की मुहर लगवा कर अपना सा मुँह लेकर लौट आई । मुझ पर तो जैसे वज्रपात हो गया, कुठाराघात हो गया, तुषारापात हो गया और क्या कहें खड़ी फसल पर पानी पड़ गया।

खैर उसको मैंने नकारात्मक न लेते हुए और श्रेष्ठ करने की ठानी। इसी परिप्रेक्क्ष्य में मैंने दूसरी रचना लिख डाली और उसी समाचार पत्र में छपने के लिये भेज दी और आश्चर्य आधे पेपर की जगह पर मेरी रचना मुस्करा रही थी । लोगों के फोन खनखना रहे थे बधाई के। मुझे प्रोत्साहन मिला और साहित्य सृजन, भाषण आदि में पारंगत होने का निश्चय कर लिया । अभी अभी तो मेरा नाम व मेरे फोटो भी छपे हैं,... सच,...

**प्रस्तुत पुस्तक में मेरे निम्नलिखित चार आलेख**

1. **ऐसे बनाई मैंने अपनी पहचान**
2. **विवाह विच्छेद और कारण**
3. **प्रेम**
4. **मैं क्या हूँ ?**

**उर्मिला मेहता**

## ऐसे बनाई मैंने अपनी पहचान

मैंने अपनी संपूर्ण आंतरिक और शारीरिक शक्ति को एकत्र कर, अपनी क्षमता के साथ लगन पूर्वक विभिन्न क्षेत्रों में अपने आप को कामयाब सिद्ध करने का भरसक प्रयत्न किया है।

हर प्रतियोगिता में प्रथम आना जैसे मेरा एकमात्र ध्येय रहता था।जब मैं विद्यालय एवं महा विद्यालय में पढ़ती थी तो वहाँ की हर गतिविधि, पढ़ाई के साथ साथ, खेलकूद, भाषण, कविता पाठ, गायन नाटक आदि में भाग लेने की ललक और उसमें सफलता प्राप्ति का पूरा आत्म विश्वास कार्य करता था।

रॉन्डा बर्न की द सीक्रेट पुस्तक तो मैंने कई वर्षों बाद पढ़ी पर उसका रहस्य मुझे बचपन में प्राप्त सफलता की कुंजी के रूप में अब अनुभूत हुआ। इन सबके आधार में मुझे अपना आत्मविश्वास ही दृष्टिगत हुआ।

किसी भी कार्य को सफलता पूर्वक करने का जुनून ही मुझे विजयी टीम की ,चाहे फिर वह कबड्डी की कप्तानी ही करना हो, खो-खो , रेस, बैडमिंटन, टैबलटेनिस, कैरम आदि भी खेलना हो तो पूरी शिद्दत के साथ उसमें भाग लेने की इच्छा जाग्रत होती थी। कई पुरस्कार और प्रमाण पत्र इसके गवाह हैं। छात्रा प्रतिनिधि, कक्षा की मानीटर, सभापति आदि चुने जाने का श्रेय मैं अपनी अंदरूनी शक्ति को देती हूँ। खंडवा के एस .एन. कॉलेज से कॉलेज कलर प्राप्त करना और
सागर यूनिवर्सिटी से यूनिवर्सिटी कलर प्राप्त करने का गौरव

मुझे आत्मिक शक्ति के साथ ही अपनी सखियों एवं हितैषियों के हौसला अफजाई से भी प्राप्त हुआ ।

मुझे याद है कि बुरहानपुर मैं टेबल टेनिस में श्रेष्ठ प्रदर्शन के बावजूद जब मेरा चयन, ऑल इंडिया नार्थ ज़ोन कानपुर में खेलने के लिये नहीं हुआ तो मैं निराश होने के स्थान पर कैसे चयनित हो सकूँ इस पर पूरे ध्यान से सोचने लगी और आकर्षण के नियम ने मेरा समाधान कर दिया।

और हुआ यूँ कि सिलेक्शन कमिटी के एक सदस्य ने अचानक पूछा कि "एनी बडी वांट्स टू प्ले विथ सिलेक्टेड प्लेयर",.. तो मैंने बिना विलंब किये खड़े होकर हाथ उठा कर कहा यस सर आय वांट टू प्ले और टेस्ट के लिये मुझे अन्य खिलाड़ी के साथ खेलाया गया।

आत्म विश्वास ने काम किया और मैं उसमें भी विजयी रही। मुझे इंटरवर्सिटी में सागर युनिवर्सिटी का प्रति निधित्व करने का अवसर प्राप्त हुआ ।

नई दुनिया , दैनिक भास्कर ,नवभारत में मेरे कई लेख छपे हैं। आकाशवाणी भोपाल एवं इन्दौर से भी मेरी रचनाओं को प्रसारित करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है और इन सबने मेरा परिचय चाहे सीमित क्षेत्र में ही सही पर उर्मिला मेहता (निराली)! एवं कवि आहत के विशेषण के रूप में करवाया है।

अतः स्वयं के आत्म विश्वास के साथ ही मैं उन सब सखियों एवं उत्साहित करने वाले हितैषियों की आभारी हूँ , जिन्होंने मेरी पहचान घरेलू महिला से हट कर विशिष्ट बनाने में सहयोग दिया । मेरी कलम में माँ सरस्वती के साथ दुर्गा की

शक्ति ने भी कार्य किया है , जिससे मुझे लक्ष्मी की प्राप्ति भी हुई !

मेरी तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनका नाम निम्नलिखित है

"उर्मिला" ,

"ऐसा आपको कब से है"

"भावांजलि"

इस तरह से अपनी लगन और आत्म विश्वास तथा दूसरों की हौंसला अफजाई से मैं साहित्यकार , खिलाड़ी और बुद्धिजीवी के रूप अपनी पहचान बना पाई ।

हिम्मत ए मर्दा , मदद ए खुदा और खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले खुदा बंदे से खुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है !

# विवाह विच्छेद और कारण

विवाह जैसा शुभ कार्य माता पिता की हार्दिक शुभेच्छा तथा अनेक विधि-विधान , रीति-रिवाज और आर्थिक जिम्मेदारी भरा होता है। जिसे वे बहुत अच्छी तरह से निभाने का भरपूर प्रयत्न करते हैं । वहीं दूसरी तरफविवाह लड़के एवं लड़की का भी मधुर सपना भी होता है। दोनों ही पक्ष अपनी -अपनी तरफ से इस कार्य को श्रेष्ठ रूप से करने का यथाशक्ति प्रयत्न करते हैं।

पिछली पीढ़ी तक विवाह करीबन सौ प्रतिशत तक सफलता पूर्वक निर्वाह किये जाते थे । लड़की के माता पिता की सीख रहती थी कि पीहर से तुम्हारी डोली उठी है पर अर्थी ससुराल से ही उठेगी। यदि ससुराल से तुम सम्मान पूर्वक आओगी तो तुम्हें सिर आँखों पर बिठाकर सम्मान पूर्वक विदा करेंगे, पर यदि हमेशा रहने की इच्छा से लड़ झगड़ कर आओगी तो पीहर में तुम्हारा कोई स्थान नहीं है।

ऐसी विचार धारा जानकर लड़की नए घर में अपने आप को तदानुसार ढालने का पूरा प्रयत्न करती। छोटी मोटी नोंक झोंक को दर किनार कर वह पूरी तरह से नए घर की हो जाती । परन्तु इसका अनुचित लाभ भी किसी , किसी घर में उठाया जाता। बहू को विभिन्न तरीकों से सताया जाता । और वह मन मसोस कर सब कुछ सहन करती रहती। और कभी कभी उसके साथ अनहोनी भी हो जाती ।

किसी भी प्रकार के हादसों को रोकने के लिये सरकार ने महिला संरक्षण के लिये कई कानून बनाए । दहेज की माँग ,

घरेलू हिंसा आदि नाम के शस्त्र स्त्री के हाथों में दे दिये जिनका दुरुपयोग आजकल चिंता का विषय होता जा रहा है। रही सही कसर माता पिता पूरी कर देते हैं।तलाक देने के लिये लाखों रुपये और महँगे शहरों में घर देने की बात लड़की से कहलवा देते हैं। जिसे पूरा करना हर एक के वश का तो है ही नहीं , अनुचित, अन्यायपूर्ण एवं पीड़ा दायक भी है। ऐसी स्थिति में लड़का लड़की दोनों ही जीवन के मझधार में डावाँडोल नौका की तरह होते हैं।विवाहित होकर भी कुँआरे से । जीवन में कोर्ट, कचहरी और अकेलेपन से जूझते रहते हैं । ऐसे में यदि माता पिता सही राह नहीं दिखाते हैं तो लड़की एवं लड़के को स्व विवेक का उपयोग कर गृहस्थी टूटने से बचाना चाहिये और यदि बच्चा भी है तो खास कर ऐसे मामले में गंभीरता पूर्वक निर्णय लेना चाहिये।

ऐसे कानून बनना चाहिये जिसमें दोनों ही पक्षों को एक नजर से देखा जाए।यदि विवाह विच्छेद की परिस्थिति बनती है तो मामले को सालों साल खींचने की दुखद मानसिकता को टालते हुए फैसला ज्यादा से ज्यादा दो साल के अन्दर सुना दिया जाना चाहिये । ताकि सम्बन्धित परिवार भविष्य के बारे में सोच सकें और अवांछनीय तनाव से मुक्त रह सकें।

## प्रेम

ढाई अक्षर प्रेम का जिसके अनेक पर्याय हैं जैसे प्यार , मोहब्बत, वात्सल्य, नेह स्नेह, अनुराग आदि जिनका समयानुसार उपयोग किया जाता है। प्रेम का विलोम घृणा, नफरत और ईर्ष्या जलन आदि हो सकते हैं ये भी कमोबेश परिस्थिति पर निर्भर करते हैं।

प्रेम शब्द इतना विराट अर्थ रखता है कि भगवान भी भक्त के आधीन हो जाते हैं।मनुष्य की तो बात ही क्या हिंसक पशु तक अपने हो जाते हैं।यदि प्रेम संसार में अपना लिया जाएतो हिरोशिमा , नागासाकी, चीन ,पाकिस्तान, बम्बई बम ब्लास्ट जैसे अनेक युद्ध और हादसों का अस्तित्व स्वतः समाप्त हो सकता है।सिया राम मय सब जग जानी , हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई ये सब हैं भाई भाई । भाईचारा विश्व बंधुत्व आदि सब प्रेम की उत्कृष्ट भावना को दर्शाते हैं। गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, जीसस क्राइस्ट, राम, कृष्ण, मदर टेरेसा और ओशो आदि प्रेम के श्रेष्ठ स्वरूप को परिभाषित करते हैं। प्रेम का अर्थ असीमित और अपरि मित है। जैसे ईश्वर । सर्वत्र, सर्वव्यापी और सर्व शक्तिमान है।

यशोदा माता सूरदास , रसखान,मीराबाई आदि कृष्ण के प्रेम में दीवाने थे तो वेदव्यास ने पूरी महा भारत ,श्रीमद्भग् वत् गीता ही लिख दी।तो राम के प्रेम में वाल्मिकी और तुलसी दास ने वृहद ग्रन्थ रामायण और राम चरित मानस की रचना ही कर दी ,जो अभी भी घर परिवार में पूजनीय ग्रन्थ के रूप में पूजा

घर में रखी जाती है । भक्त उनका पारायण करते हैं और उनके आदर्श को ग्रहण करते हैं।

प्रेम, फिल्मी स्तर पर सौंदर्य का गुणगान एवं नायक नायिका की धमा चौकड़ी या 'पकड़ा पाटी 'के खेल जैसा होता है जिसमें कभी सच्चा प्रेम तो कभी धोखा धड़ी भी होती है।

हीर रांझा, लैला मजनूँ, संयोगिता पृथ्वी राज आदि का प्रेम प्रसिद्ध है।महाकवि बिहारी , केशवदास, मलिक मोहम्मद जायसी (पद्मावत के रचयिता) आदि हिंदी साहित्य के ऐसे ही श्रृंगार रस प्रधान साहित्य कार हुए हैं।

आधुनिक समय में तो प्रेम , और प्रेमी- प्रेयसी आम बात भी तरह होती जा रही है जो 'अच्छी बात नहीं है ' ।

निष्कर्ष रूप में प्रेम यदि सच्चा हो तो हमारे लौकिक,आध्यात्मिक एवं ईश्वर प्राप्ति के लिये के लिये आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है ।**-इति प्रेम कथा सम्पूर्ण-**

# मैं क्या हूँ ?

मैं क्या हूँ ? यह प्रश्न देखने में जितना सरल है , उत्तर देने में उतना ही जटिल । अतः असमंजस की ऐसी स्थिति में पहले मैं अपना दृष्टि कोण सामने रखती हूँ , तत्पश्चात् उन महान योगियों , महर्षि, विद्वानों द्वारा उपदेशित विचारों को अभिव्यक्त करने का प्रयास करूँगी जिन्होंने इस क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया है। इन हस्तियों में श्रीकृष्ण, गौतम बुद्ध, प्रभु यीशु, विवेकानंद, पतंजलि योग सूत्र , बिंदु उपनिषद् आदि हैं। जिन्हें कभी मैंने पढ़ा या सुना है। ओशो (रजनीश)का नाम भी महत्वपूर्ण है।

उपर्युक्त विद्वानों द्वारा व्यक्त विचार किसी एक व्यक्ति का उत्तर नहीं वरन् मनुष्य मात्र का उत्तर हो सकता है।

तो अब मैं लेख के शीर्षक पर आती हूँ । 'मैं क्या हूँ।' एक महिला हूँ? किंतु जब मैं साहित्य की विविध विधाओं पर लिखती हूँ तब मैं एक साहित्यकार बन जाती हूँ। जब मैं खेलों को खेलती हूँ तब एक खिलाड़ी और आकाशवाणी आदि पर बोलती हूँ तब एक वक्ता बन जाती हूँ। इसी प्रकार एक बेटी होते हुए भी पत्नी , बहू, माता, सास और दादी का किरदार निभाती हूँ। क्या मेरा पहनावा, देश, नागरिकता, शिक्षा आदि इस प्रश्न का उत्तर हैं ? किंतु ये सभी तो परिवर्तन शील एवं क्षण भंगुर हैं।

तो वह कौन सा रिश्ता है जो इस प्रश्न को सार्थक करता है ? यदि रिश्तों से उत्तर नहीं मिलता है तो क्या मेरा व्यवहार इस प्रश्न का उत्तर दे सकता है ? क्या मैं वह आत्मा हूँ

जो सदैव प्रसन्न चित्त एवं शांत रहना चाहती है। तो फिर उन क्षणों का क्या जब मेरा मन अशांत हो जाता है। मुझे लगता है कि उन ज्ञानी, विद्वानों द्वारा कहा गया तथ्य ही सत्य है कि विचार ही मन है और मन ही मैं हूँ । मैं परमात्मा का अंश हूँ, जो सदैव ईश्वरीय प्रकाश से आलोकित रहना चाहता है। श्री राम, कृष्ण आदि के मनुष्य रूप में अवतरित होने पर उनके मस्तक के चारों तरफ जो आभा मंडल , तेज या 'ओरा' दिखाई देता है, वह इसी बात को दर्शाता है ।

अहं ब्रह्माऽस्मि। सिया राम मय सब जग जानी। जल में कुंभ है , कुंभ में जल है , बाहर भीतर पानी, फूटा कुंभ, जल जल ही समाना , यह तत्व कहो ग्यानी । तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्यार्मा अमृतं गमय, असतो मा सद्गमय ।

अंत में निष्कर्ष रूप में, मैं एक शुद्ध और पवित्र आत्मा हूँ जो सत्चित और आनंद से परिपूर्ण है। शेक्स पियर के अनुसार संसार एक मंच है जहाँ पर सभी अपना अपना किरदार निभाते हैं और मैं अपना किरदार श्रेष्ठ रूप से निभाने का पूरा प्रयास कर रही हूँ। ॐ शांति ॐ।

**उर्मिला मेहता**

# हिन्दीग्राम के बारें में

हिन्दी ग्राम शब्द में ही सम्पुर्ण परिकल्पना समाहित है, एक ग्राम जो सबसे छोटी ईकाई होकर भी समग्र को समेट कर संचालित होता है, उसी उद्देश्य को हिन्दी ग्राम में सहेजा जा रहा है|
हिन्दी ग्राम का मूल उद्देश्य हिन्दी भाषा को रोजगार मूलक व व्यवसाय से जोड़ना है, क्योंकि विश्व की कोई भी भाषा जैसे अंग्रेजी, जापानी, चाईनीज, फ्रैन्च आदि जब तक बाजार से नहीं जुड़ी तब तक उसका विकास सीमित ही रहा है | उसी तरह संस्कृत बाजार से दुर रही तो उसे विलुप्तता की कगार पर ला पहुँचाया, यही हाल हिन्दी का भी हो रहा है| परन्तु हिन्दी को बाजार मूलक बनाने और उसमें रोजगार के अवसर लाने के उद्देश्य से हिन्दी ग्राम की शुरुआत की गई है|
मूलत: हिन्दी ग्राम के माध्यम से विश्व स्तर पर हिन्दीभाषियों के लिए रोजगार के अवसरों को तलाशकर जानकारी उपलब्ध करवाना, हिन्दी का प्रचार करना, हिन्दी में शिक्षा ग्रहण करने के लिए लोगों को प्रेरित करना, हिन्दी शिक्षण से रोजगारोन्मुखी कार्यक्रम संचालित करना, लेखन व रचनाकारों को जोड़ना, भारत में हिन्दी के प्रति प्रेम वर्धन करना, पर्यटन से राजस्व प्राप्त करने वाले राज्यों में हिन्दी का प्रसार कर वहा हिन्दी भाषी पर्यटकों की सहायता करना तथा राज्यों में पर्यटको का रुझान बढ़ाना और राज्यों की राजस्व वृद्धि करना, भारतीय संस्कृति के संरक्षण हेतु हिन्दी का विस्तार करना, हिन्दी की भूमिका से भारतीयता के प्रति जागरुक विदेशीयों को आकर्षित करना और देशभर में हिन्दी से लोगों को जोड़ने के लिए हिन्दी में हस्ताक्षर करने के लिए प्रेरित करना है | हिन्दीग्राम की मुख्य संस्था मातृभाषा उन्नयन संस्थान हैं जिसकी इकाईयां अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन, मातृभाषा.कॉम, साहित्यकार कोश है| रचनाकारओं को एक सशक्त मंच प्रदानकर उनके सृजन को सहेजना प्रथम कर्तव्य होने के साथ उनके सृजन से उन्हें कुछ आय प्राप्त हो इस दिशा में भी संस्थान प्रतिबद्ध हैं |

# हस्ताक्षर बदलो अभियान
## प्रतिज्ञा पत्र

मैं.....................................................................................प्रतिज्ञा लेता/लेती हूँ कि आज से राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए,राष्ट्र की एकता और अखंडता के हित में स्वयं को समर्पित करते हुए भारतीय संस्कृति और सभ्यता के सम्मान और सुरक्षा हेतु जीवनपर्यन्त तत्पर रहूंगा/रहूंगी । भारत माता और मातृभाषा हिन्दी के सम्मान को सर्वोपरि रखकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करूँगा/करुँगी।

मैं हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने हेतु आरम्भ किये गए महायज्ञ 'हस्ताक्षर बदलो अभियान' में सतत सहभागी रहूंगा/रहूंगी।

**भवदीय,**

**हस्ताक्षर:** ...........................................................................

**नाम :** ..............................................................................

**पिता का नाम:** .....................................................................

**पता:**..................................................................................

.........................................................................................................

..................................................................................

**संपर्क:**...............................................................................

**अणुडाक (ईमेल):**.................................................................

**व्हाट्सअप संपर्क:**..................................................................

# हस्ताक्षर बदलो अभियान

संस्थान द्वारा राष्ट्रव्यापी हस्ताक्षर बदलो अभियान संचालित किया जा रहा हैं, जिसमें हमें हमारे जीवन की सबसे छोटी इकाई हस्ताक्षर को स्वभाषा में करना होगा यदि आप अँग्रेज़ी में हस्ताक्षर करते है तो केवल एक छोटा-सा परिवर्तन कीजिए, यकीन मानिए आपकी एक आदत बदलने से हमारी मातृभाषा हिन्दी राष्ट्र भाषा का गौरव हासिल कर सकेगी । और स्वभाषा से प्रेम भी प्रदर्शित होगा साथ ही स्वभाषा और हिन्दी को महत्व मिलेगा । 'एक कदम इंडिया से भारत की ओर' के अंतर्गत हस्ताक्षर बदलो अभियान में आपकी सहभागिता सुनिश्चित करेगी । वर्तमान में लगभग १ लाख लोगो द्वारा मय प्रतिज्ञा पत्र के द्वारा हिन्दी में हस्ताक्षर करने की प्रतिज्ञा ली गई हैं ।

# भाषासारथी

**क्या आप बनना चाहते हैं हिन्दी प्रचारक?**

क्योंकि

- आज हिन्दी को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने के लिए हमें जुटकर हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना होगा,
- हस्ताक्षर बदलो अभियान को अपने क्षेत्र में संचालित एवं प्रचारित करना होगा,
- हिन्दी लेखन करने वाले साथियों को आय दिलवाने में मदद करनी होगी,
- हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उसे बाजार मूलक भाषा बनानी होगी,
- हिन्दी साहित्य को आमजन तक पहुँचाना होगा,
- हिन्दी के प्रचार हेतु अपने क्षेत्र में हिन्दी प्रेमियों का समुच्चय बनाकर प्रतियोगीताएं, कार्यक्रम आदि का संचालन करना होगा।

और भी बहुत सी गतिविधियाँ जो हिन्दी के लिए करनी होगी।

**मातृभाषा परिवार**

www.matrubhashaa.com

matrubhashaa@gmail.com

## व्यक्तित्व दर्पण

नाम - उर्मिला मेहता

जन्मतिथि - 28 अप्रैल 1949

शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी)

कार्य - अध्यापन :- नागपुर वि.वि. द्वारा संचालित इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल वर्क नागपुर में स्नातक कक्षाओं तक का हिंदी अध्यापन कार्य।
स्कॉलर्स होम भोपाल एवं श्री गुरु तेग बहादुर पब्लिक स्कूल रतलाम में हिंदी तथा संस्कृत का अध्यापन कार्य।

पता - 104 पलसीकर कॉलोनी, इंदौर (म.प्र.)

प्रकाशन - 1. उर्मिला खंड काव्य
2. ऐसा आपको कब से है? (हास्य व्यंग्य रचना संग्रह)
3. भावांजलि (काव्य संग्रह)

लेखन - विद्यार्थी जीवन से साहित्य लेखन में सक्रिय विद्यालयीन पत्रिका तथा स्थानीय समाचार पत्रों में लेखन के पश्चात् नई दूनिया के अधबीच, खुला खाता एवं दैनिक भास्कर के राग दरबारी स्तंभ में व्यंग्य रचनाएं, लेख आदि प्रकाशित।
- आकाशवाणी भोपाल तथा इंदौर के अनेक वार्ताएं एवं काव्य प्रसारण।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-15-5
मूल्य 40/-
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com